अथ द्वादशोऽध्यायः

बाह्मां भक्तियोग अद्धयाय

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये, भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं, तेषां के योगवित्तमाः।। १

अर्जन बोल्या

(कोण भगत सैँ सब तैँ आच्छे)

न्यूँ इस तह्रियाँ जो लाग्गे रहँदे, सदा भगत सैँ करदे तेरी।
सेवा किरसण, अर अविकारी, इन्द्रिय जिस नै व्यक्त करैँ नाँ।।
उस की सेवा करदे जो सैँ, इन मैँ सैँ कोण योग नै जो।
जाणनियाँ मैँ उत्तम हौं सैँ?।। १

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां, नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्, ते मे युक्ततमा मताः।। २

स्रीभगुवान् बोल्ले

(मेरै मैँ ए लाग्गै रहँदे, सब तैँ आच्छे लाग्गैँ मन्नै)

मुझ बिस्वरूप मैँ ला मन नै, मेरी खात्तर कर्म करण मैँ।
लाग्गे रहँदे सदा, करैँ सैँ, मेरी भक्ती नो तह्रियाँ मैँ।
किस्सै तह्रियाँ परम भाव तैँ, सर्धा तैँ भर कैँ जो सैँ वैँ।
सब तैँ आच्छे लाग्गे मुझ मैँ, भगत इसे वैँ मन्नै लाग्गैँ।। २

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च, कूटस्थमचलं ध्रुवम्।। ३

जो तो सै अविकारी, जिस नै, कोए सबद बता नाँ पावै।
प्रगट न जो सै किस्सै तह्रियाँ, कर्म ग्यान की इन्द्री सारी।।
परगट जिस नै नाँ कर पान्दी, सब जाग्घाँ काळाँ चीज्जाँ मैँ।

व्याप्प्या जो सै अर जिस नै नाँ, मन बी सोच सकै सै, जो सै।।
'कूट' वस्तु जो दीक्खै किम्मै, हो नाँ वो, पर सै छळ माया।
उस मैँ स्थित सै स्वामी उस का, 'कूट' ढेर-सा लोन्दा, जिस का।।
आकार विकार किमे नाँ हो, उस की तह्रियाँ अविकारी स्थित।
'अचल' न हाल्लै निज स्वरूप तैँ, 'ध्रुव' नित्य सदा स्थिर जो रहँदा।।
इस तह्रियाँ कै निर्गुण तत नै, निज रूप समझ उस मैँ स्थित हौं।
तन्मय हो ज्याँ अर नाँ देक्खैँ, आत्मभाव तैँ भिन्न किमे जो।। ३

संनियम्येन्द्रियग्रामं, सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव, सर्वभूतहिते रताः।। ४

(वैँ पावैँ सैँ मन्नै)

आच्छी तह्रियाँ काब्बू कर कैँ, इन्द्री सारी आप्णी सब मैँ।
सब नै एक जिसा जो समझैँ, वैँ पावैँ मन्नै ए माणस।
भला सभी का करणै मैँ खुस, सब भूत्ताँ कै हित मैँ लाग्गे।। ४

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं, देहवद्भिरवाप्यते।। ५

फळ की इच्छा त्याग करम सै, ईस्वर-अर्पित करणा मुस्कल।
इस तैँ मुस्कल मारग उन का, ब्रह्म अतीन्द्रिय मैँ मन बाँधैँ।
अव्यक्त अतीन्द्रिय गति पाणा, मुस्कल सै देहधारियाँ नै।। ५

ये तु सर्वाणि कर्माणि, मयि संन्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन, मां ध्यायन्त उपासते।। ६

जो तो सब काम्माँ नै मेरै, ऊप्पर छोड्डैँ कर कैँ अर्पित।
मन्नै ए 'पर' सब तैँ ऊप्पर, लक्स्य समझदे मेरै आस्रित।।
ओर किसै का आस्रै नाँ ले, मन नै काब्बू मैँ कर मेरा।
चिन्तन करदे मुझ मैँ बैट्ठैँ, मेरी भक्ती सैँ वैँ करदे।। ६

तेषामहं समुद्धर्ता, मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात् पार्थ, मय्यावेशितचेतसाम्।। ७

जिन नै मुझ मैँ चित्त लगाया, उन का मैँ उद्धार करणियाँ।
होऊँ सूँ अर देरी नाँ कर, जित कूद्दण तैँ मरणा पक्का।
उस भवसागर तैँ पिरथासुत।। ७

मय्येव मन आधत्स्व, मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव, अत ऊर्ध्वं न संशयः।। ८

(मेरै मैँ तैँ मन नै ला ले)

मेरै मैँ ए मन नै ला ले, मेरै मैँ बुद्धि टिका ले तैँ।
वास करैगा मेरै मैँ ए, तन छुट्यै पाच्छै, नाँ साँसा।। ८

अथ चित्तं समाधातुं, न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो, मामिच्छाप्तुं धनंजय ।। ९

जै मन एकाग्र नहीँ तैँ कर, सकदा मेरै मैँ थिर अर्जन।
मन नै फिर-फिर एक ततव पै, एकाग्र करण तैँ उस तैँ तैँ।
मन्नै इच्छा कर पाणै की, दुस्मन का धन जीत्तणिये रै।। ९

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि, मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि, कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि।। १०

कर कैँ आप्णी इन्द्री बस मैँ, मन नै बी एकाग्र करण का।
अभ्यास बी नहीँ कर सकदा, मेरै तइँ कर्म करणियाँ बण।
मेरै खात्तर बी करमाँ नै, करदा सिद्धी पावैगा तैँ।। १०

अथैतदप्यशक्तोऽसि, कर्तुं मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं, ततः कुरु यतात्मवान्।। ११

जै यो बी नाँ कर सकदा ले, मेरै कर्मयोग का आस्रै।
सब कर्माँ कै फळ तैँ तज दे, हो काब्बू मैँ आप्पै आळा।। ११

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्, ज्ञानाद् ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात् कर्मफलत्यागस्, त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।। १२

आच्छा सै जो गरु तैँ सुण कैँ, मन तैँ उस पै चिन्तन कर अर।
बिसै समझ मैँ आवै सै वो, समझ्यैँ बिन अब्भ्यास कर्यैँ तैँ।।

अर ग्यान तैँ सै ध्यान बढ कैँ, 'निदिध्यासन' सै नाम जिस का।
कर्मफळाँ का त्याग ध्यान तैँ, कर्मफळाँ नै छोड्यैँ पाच्छै।
हो सै स्यान्ती बिना देर वा।। १२

अद्वेष्टा सर्वभूतानां, मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः, समदुःखसुखः क्षमी।। १३

(मन्नै प्यारे इकताळीस भगत)

[१]नाँ द्वेस करै सब भूत्ताँ तैँ, [२]प्रेम करणियाँ मित्तर हितकर।
[३]दया-मया बी सब पै रखदा, [४]मेरा-तेरा, [५]मैँ-मैँ बी नाँ।
करदा माणस [६]सुख मैँ दुख मैँ, रहै एक-सा [७]सहण करणियाँ।। १३

संतुष्टः सततं योगी, यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्, यो मद्भक्तः स मे प्रियः।। १४

[८]दुनियादारी चाल्लण खात्तर, जो बी मिल ज्या, या नाँ मिल ज्या।
आच्छा, भूण्डा जो बी मिल ज्या, 'भोत मिल्या', यो मान रहै खुस।।
[९]सदा चित्त नै साद्धे राक्खै, [१०]काब्बू मैँ राक्खै आप्पै नै।
[११]मजबूत इराद्याँ आळा हो, [१२]मन्नै सौँप्पै मन बुद्धी जो।
भगत इसा वो मन्नै प्रिय सै।। १४

यस्मान्नोद्विजते लोको, लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्, मुक्तो यः स च मे प्रियः।। १५

[१३]जिस तैँ नाँ ऊब्बै दुनियाँ, [१४]दुनियाँ तैँ नाँ ऊब्बै अर जो।
[१५]खुसियाँ जो मनभावन पा हौँ, [१६]इस्टलाभ मैँ बाधा पा कैँ।।
मनभाया अर नाँ मिलणै पै, सह नाँ पा कैँ छोः मैँ आवै।
[१७]डर [१८]उभ-चुभ ऊब, सबै तैँ, छूट्टया सै, वो मेरा प्रिय।। १५

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष, उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी, यो मद्भक्तः स मे प्रियः।। १६

[१९]पाणाँ जिस तैँ, करणाँ जिस नै, उस की उस तैँ बाट न देक्खै।
[२०]तन मन सुथरे साफ रखै जो, वाणी सुच्ची हितकर बोल्लै।।

लेणै-देणै, ब्यौहाराँ मैँ, आपणै हित की, हानि लाभ की।
चिन्ता नाँ कर काय्दै तैँ जो, चाल्लै सै वो माणस सुच्चा।।
[२१]'दक्ष' चतुर अर उत्साही हो, [२२]ब्योहाराँ तैँ ऊप्पर अर हो।
ल्हिसदा नाँ दुनियाँदारी मैँ, ऊप्पर हो देक्खै दुनियाँ नै।।
[२३]डर व्याकुलता जिस कै नाँ हौं, [२४]सब इस अर परली दुनियाँ के।
फळ देणाळे करम छोड़दा, भक्त इसा जो मेरा होवै।
लाग्गै मन्नै प्यारा वो सै।। १६

यो न हृष्यति न द्वेष्टि, न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी, भक्तिमान् यः स मे प्रियः।।१७

[२५]जो नाँ खुस हो किम्मे पा कैँ, [२६]बुरा न चीत्तै उन का बी जो।
बुरा करैँ सैँ बिन कारण बी, [२७]सोक करै नाँ इस्टहानि मैँ।।
[२८]नाँ चाहै उस पाः जो नाँ हो, [२९]मङ्गल और अमङ्गल दृस्टी।
पुण्य-पाप नै, असुभ सुभाँ नै, छोड्डै माणस, मन मैँ नाँ रख।
भक्ती राक्खै मुझ मैँ जो सै, वो सै माणस मन्नै प्यारा।। १७

समः शत्रौ च मित्रे च, तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु, समः सङ्गविवर्जितः।। १८

[३०]एक जिसा हो शत्रु मित्र मैँ, [३१]आदर और अनादर मैँ बी।
[३२]सर्दी गर्मी, सुख दुःखाँ मैँ, एक जिसा, [३३]आसक्ति रखै नाँ।। १८

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी, संतुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्, भक्तिमान् मे प्रियो नरः।।१९

[३४]एक जिसा हो ताक्खड़ियाँ कै, पलड्याँ-सा निज निन्दा स्तुति मैँ।
[३५]ओर किसै की निन्दा-स्तुति मैँ, धारै मौन, न बोल्लै सोच्चै।।
[३६]भोत मान कैँ खुस जो रहँदा, मिल ज्या जो कुछ, उस मैँ अर्जन।
[३७]मान्नै नाँ घर आप्णा कोए, डेरा एक जघाँ नाँ डाल्लै।।
[३८]थिर अविचळ बुद्धी आळा, टिक कै भक्ति करै जो मेरी।
मेरा प्रिय वो माणस हो सै, मेरा प्रिय वो माणस हो सै।। १९

ये तु धर्म्यामृतमिदं, यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा, भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।। २०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

(भगवान् नै भोत्तै प्यारे भगत)

[३९]दुनियाँ नै जो धारण करदे, दुनियाँ जिन तैँ टिकी रहै सै।
इस तह्नियाँ के कर्तब सारे, अर्थ काम नै सम जो रखदे।।
देस काल अर व्यस्टि समस्टी, सब का हित जो साद्धै राक्खैँ।
धर्म कुहावैँ धारण कारण, उस तैँ जो यो दूर नहीँ सै।।
इमरत-सा दुख-दर्द मिटावै, पळ-पळ देक्खै राह खड़ी जो।
उस मृत्यू तैँ जो छुटवावै, इस तह्नियाँ का मन्नै बोल्ल्या।।
इस कै धोरै जो आ बैट्ठैँ, [४०]स्रद्धा रखदे इस मैँ आप्णी।
करैँ आचरण इस बोल्ल्यै का, [४१]मन्नै ए पर लक्स्य गिणैँ वैँ।।
भगत भोत सैँ मन्नै प्यारे, सैँ वैँ मन्नै, भोत्ते प्यारे।
भोत्ते प्यारे, प्यारे, प्यारे, प्यारे अर्जन, भोत्ते प्यारे।। २०

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैँ बाह्नमाँ अद्ध्याय पूरा होया।। १२।।

पूर्वसलोकयोग ४६९ + २० = ४८९